डरना मना है

डरावनी कहानियाँ

–: पहला 1 दर्जन :–

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW

डरावनी कहानियाँ

बँगला भूतिया एवं डरावनी कहानियों का हिन्दी अनुवाद- 1ला दर्जन

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit
Image by liuzishan on Freepik

Storyline illustrations are copied from the original Bengali book.

-: eBook :-

DARAWANI KAHANIYAN (Pehla Darjan)
(Horror Stories, 1st Dozen)
Hindi translation of the 12 Bengali horror stories.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: © 2023: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (Sahibganj), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 125.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

कहानियाँ

रेल की बोगी.....6

मूर्ती 14

क्या था वह? 17

सेमलतल्ले की हवेली 23

बन्दर का पैर 31

बरसाती शाम की कहानी..... 37

सपने का मकान 47

सिरफोड़वा मैदान 50

रामास्वामी का रत्न 60

भूतों का राजा 64

कौन थी वह? 75

मिसेज कुमुदिनी चौधरी 82

रेल की बोगी

(कामरा आर आमरा)

माँ ने कहा, “अरे आज अगस्त्य-यात्रा है! आज के दिन यात्रा नहीं करते।”

सूटकेस में कपड़े रखते हुए मैंने कहा, “किसलिए- बताना जरा? आज यात्रा करने से क्या होगा?”

माँ बोलीं, “आज के दिन यात्रा करके अगस्त्य मुनि फिर लौटकर नहीं आये थे।”

मैंने कहा, “अगस्त्य मुनि की पत्नी उन्हें बहुत तंग करती थीं। इसी वजह से ‘अभी आया’ कहकर वे भाग खड़े हुए थे।”

माँ ने प्रतिवाद करते हुए कहा, “कहाँ, शास्त्रों में तो ऐसा नहीं लिखा है!”

मैंने कहा, “शास्त्रों में ऐसा लिखने से अगस्त्य मुनि की पत्नी मानहानि का मुकदमा दर्ज करा के शास्त्रकारों की खाट जो खड़ी कर देतीं! इसीलिए शास्त्रकारों ने इस बात को दबा दिया।”

माँ ने कहा, “अरे नहीं रे, विंध्या पर्वत– ”

मैंने रोकते हुए कहा, “रहने दो माँ, वह कहानी मैं जानता हूँ। तुम्हें डरने की कोई जरुरत नहीं है। महीना भर देश घूमकर मैं ठीक लौट आऊँगा। तुम्हारी-जैसी माँ को भूलकर भला कोई बेटा घर से दूर रह सकता है? चलो अब, एक प्रणाम लेकर हँसते हुए मुझे आशीर्वाद करो।”

माँ ने हिचकते हुए मुझे आशीर्वाद दिया।

जतीन और मैं, दोनों देश घूमने निकले थे। जतीन लॉ कॉलेज में पढ़ता था और मैं मेडिकल कॉलेज में।

हावड़ा स्टेशन में हम दोनों सेकेण्ड क्लास की एक बोगी में सवार हुए। इस समय में लोग घूमने नहीं जाया करते थे, इसलिए हम लोग घूमने निकले थे। ट्रेनों में भीड़-भाड़ नहीं होगी- दोनों आराम से हाथ-पाँव फैलाकर सोकर-बैठकर यात्रा कर सकेंगे। दुर्गापूजा और बड़े दिन के आस-पास घूमने जाने को हम दूर से ही नमस्कार करते थे! इन दिनों में घूमने जाना नर्क-यंत्रणा भोगने के समान होता था!

पहले हमने बनारस जाना तय किया था- कल दोपहर तक वहाँ पहुँचने की उम्मीद थी। सारी रात ट्रेन में बीतेगी। अतः हमारी बोगी में किसी और यात्री को न देख हम बहुत खुश हुए। किसी और के आने से पहले ही दो बर्थ पर दो बिस्तर बिछाकर हम लेट गये।

लेटे-लेटे दोनों मित्रों ने ढेर सारी बातें कीं। फिर जब बर्द्धमान पार हुआ, तब जतीन ने उठकर बत्तियाँ बुझा दीं। कुछ देर तक जतीन के खर्राटों को सुनते रहने के बाद मुझे भी नीन्द आ गयी।

कब तक सोया था- याद नहीं। अचानक नीन्द खुली। कोई मुझे हिला रहा था। धीरे-धीरे उठकर बैठा। साथ-ही-साथ सामने की बर्थ पर जतीन भी धड़पड़ाकर उठ बैठा।

मैंने पूछा, “जतीन, मुझे क्यों जगाया?”

जतीन बोला, “मैं भी तुमसे यही सवाल करना चाहता हूँ।”

“क्या मतलब?”

“तुम तो मुझे हिलाकर जगा रहे थे।”

मैंने आश्चर्य से कहा, “क्या कह रहे हो? मैं तो आराम से सो रहा था, तुमने मुझे हिलाकर जगाया!”

जतीन हँसकर बोला, “वाह, गजब करते हो! पहले धक्का मारकर मुझे जगा दिया और अब मुझ पर ही दोष डाल रहे हो?”

मैंने कहा, “नहीं भाई, मैं सच बोल रहा हूँ, मैं यहाँ से एक कदम भी नहीं खिसका हूँ। तुम्हें तो मैंने धक्का नहीं ही दिया है, उल्टे तुमने मुझे धक्का मारा है। मेरे साथ मजाक कर रहे हो क्या?”

जतीन गम्भीर होकर बोला, “बोगी में और कोई आदमी नहीं है, फिर हम दोनों को धक्का किसने मारा? चोर-वोर तो नहीं घुस आया?”

सुनते ही जल्दी से उठकर मैंने बत्तियाँ जलायीं। इधर-उधर जाकर देखा- बोगी में हम दोनों के अलावे कोई नहीं था और हमारे सामान भी ज्यों-के-त्यों रखे हुए थे।

जतीन बोला, “जरूर चोर घुसा होगा। संयोग से हमारी नीन्द खुल गयी और इसलिए सामान चुराने से पहले उसे खिसकना पड़ा। बच गये हम!”

मैंने कहा, “खिड़कियों को बन्द कर दो और बत्ती बुझाने की भी जरुरत नहीं है। अच्छा झमेला है!”

फिर कुछ देर तक हम दोनों बातें करते रहे और उसके बाद दोनों सो गये।

लेकिन फिर नीन्द खुल गयी।

इस बार कोई मुझे धकिया नहीं रहा था, बल्कि बोगी के अन्दर कहीं से एक कुत्ता कातर स्वर में घिघिया रहा था।

रोशनी जलाकर सोये थे हम, लेकिन उठकर देखा- बोगी में धुप्प अन्धकार छाया हुआ था!

अन्धेरे में जतीन का स्वर सुनायी पड़ा- वह कह रहा था, “अब यह क्या है! आज दुनिया भर की आफत यहीं जुट गयी है क्या?”

कुत्ता जिस तरह से घिघिया रहा था कि लगा- उसे गहरी चोट लगी है; लेकिन सवाल था कि जब बोगी के दरवाजे-खिड़कियाँ सब बन्द थीं, तो वह अन्दर आया कैसे? कुत्ता अचानक जोर से कें-कें करके फिर एकदम से चुप हो गया।

मैंने पूछा, “जतीन बत्ती किसने बुझायी?”

जतीन बोला, “मुझे नहीं पता। मैं सोच रहा था- तुमने बुझायी है?”

“कुत्ता अन्दर ही है। बर्थ से पैर नहीं उतार सकते- कहीं बेटा काट न खाये! तुम्हारा टॉर्च कहाँ है?”

“मेरे पास ही है।”

“जलाकर देखो तो- कुत्ता कहाँ पर है?”

जतीन टॉर्च जलाकर बोगी में देखने लगा और मैं अपनी लाठी सिर के ऊपर तानकर तैयार रहा कि अगर कुत्ता झपटे, तो उसकी भवलीला समाप्त कर देनी है।

लेकिन बोगी में कहीं कोई कुत्ता नहीं मिला। कुत्ता-वुत्ता कुछ नहीं था।

स्विच के पास जाकर देखा- वह दबा हुआ ही था।

मैंने कहा, “विचित्र बात है! अभी जो कुत्ता चिल्ला रहा था, वह आया कहाँ से और वह गायब कहाँ हो गया?”

जतीन बोला, “कुत्ता शायद पास वाली बोगी से चिल्ला रहा था। नीन्द के मारे हमने गलत सुना है।”

मैंने कहा, “सही कह रहे हो, लेकिन आज की नीन्द रफा-दफा हो गयी। चलो, बैठकर गप्पें मारते हैं।”

-इतना कहकर मैं बैठ गया।

साथ-ही-साथ महसूस हुआ- कोई और भी मेरे पास आकर बैठा।

घने अन्धेरे में बोगी के अन्दर कुछ नहीं सूझ रहा था।

मैंने कहा, “अपनी सीट छोड़कर यहाँ आ गये जतीन?”

उधर की बर्थ से जतीन बोला, “कहाँ- मैं तो यहाँ से नहीं उठा हूँ!”

मैंने हाथ बढ़ाकर देखा, मेरे बगल में कोई नहीं था!

इसके बाद ही सुना, कोई मेरे कान में फुसफुसाकर कुछ कह रहा था। वह क्या कह रहा था- यह पता नहीं चल रहा था, लेकिन कोई कुछ कह रहा था- इसमें कोई सन्देह नहीं था!

अचानक जतीन बोला, “मोहन, तुम कहाँ हो?”

मैंने सहमे स्वर में कहा, “अपनी बर्थ पर।”

जतीन भयभीत होकर बोला, “फिर मेरे कान में कौन कुछ कह रहा है?”

जवाब न देकर मैंने दोनों हाथ दोनों तरफ फैला दिये, लेकिन मेरे हाथ किसी के शरीर से नहीं टकराये; जबकि कोई मेरे कान के पास मुँह लाकर अब भी फुसफुसा रहा था।

डॉक्टरी पढ़ रहा था, प्रायः रोज ही दो-एक ताजे या सड़े हुए मुर्दे पर हँसते हुए छूरी चलाता था, गहन रात्रि में अकेले मुर्दे के पास बेखटके बैठा रहता था, कभी सपने में भी भूत नहीं देखा, लेकिन पता नहीं क्यों, आज इस अन्धेरे में मेरा सर्वांग एक अनजाने भय से पत्थर की मूर्ती के समान स्थिर और ठण्डा पड़ गया- एक हाथ तक हिलाने की शक्ति नहीं रही।

जतीन की भी शायद यही हालत थी। वह प्रायः रूआँसे स्वर में बोला, “मोहन-मोहन, बोगी में कुछ लोग सवार हुए हैं, कोई मेरे कान में फुसफुसा रहा है, सुनो-सुनो, कोई चल-फिर भी रहा है!”

सही बात थी! बोगी भर में कोई चल-फिर रहा था- खट्-खट् खट्-खट्, खड़मड़ खड़मड़ खड़मड़! यह जैसे मांस से रहित हड्डियों की आवाज हो! मैं पहचानता था इस आवाज को- कंकाल को हिलाने से ठीक ऐसी ही अस्थिझंकार बजती है।

लेकिन तब मुझमें हिलने की शक्ति नहीं थी, जैसे किसी ने जादू-मंत्र पढ़कर मेरे सारे शरीर को पक्षाघातग्रस्त कर दिया था। अचानक एक और बात हुई! बोगी के एक कोने से स्त्री स्वर में किसी ने उँ-उँ-उँ-उँ करके रोना शुरू कर दिया!

कान के पास फुसफुसाहट, बोगी भर में कंकाल के चलने की खटखटाहट, एक कोने से स्त्री स्वर में उँ-उँ-उँ-उँ करके रोने की आवाज- घने अन्धेरे में जड़वत् बैठे-बैठे यही सब सुन रहा था। जतीन की तरफ से कोई आहट नहीं थी, कहीं वह डर से बेहोश तो नहीं हो गया था?

अब यह क्या था? कंचे के समान दो लाल-लाल दहकती हुई चीजें हवा में तैरते हुए चारों तरफ घूम-फिर रही थीं! क्या थीं ये? अन्धकार की सुलगती आँखें?

दोनों आँखें तैरते हुए मुझसे कोई तीन हाथ की दूरी पर आकर स्थिर हो गयीं! जैसे, बहुत गौर से मेरा निरीक्षण कर रही हों! देखते-देखते दोनों दहकती आँखों